North Asian International Research Journal of Multidisciplinary

IRJIF IMPACT FACTOR:6.019

ISSN: 2454-2326 Vol. 6, Issue-10 October -2020

Index Copernicus Value: 58.12 DOI NUMBER: 10.5948/2454-2326.2020.00008.0 Cititation Index

A Peer Reviewed Refereed Journal

माधवी नाटक: एक विश्लेषण

डॉ लक्ष्मण भोसले

सहायक प्राध्यापक

सरकारी प्रथम श्रेणी महाविद्यालय,

जेवर्गी, जिला कलबुरगी, कर्नाटक।

प्रस्तावना

मानव को महामानव बनाने वाले अनेकों गुणों में वचनबद्धता एक महत्वपूर्ण गुण है। प्राण जाए पर वचन न जाए यह सूत्रवाक्य भारतीय समाज, साहित्य एवं संस्कृति के मूल में जड़ों का काम करता है। मनुष्य के पवित्र परिश्रम में प्रकृति अपना योगदान देती है। इसी विश्वास से गालव अपने अपने गुरु की आज्ञा पालन करने की प्रतिज्ञा करता है। अपनी प्रतिज्ञा पूर्ति में गालव को जब विफलता दिखाई देने लगती है तो वह आत्महत्या को वही एकमात्र समाधान मानने लगता है। गालव की आत्महत्या के विषय को समझकर स्वर्गलोक में देवगणों को चिंता होने लगती है। गालव को देवलोक से संदेश पहुंचाया जाता है कि वह धरती के श्रेष्ठतम दानवीर महाराज ययाति से सहायता मांगे। राजा ययाति के दरबार से कोई याचक अब तक खाली हाथ नहीं लौटा है।

देवताओं के आदेशानुसार गालव धरती के महादानी ययाति से 800 अश्वमेधी घोड़ों की याचना करता है। परंतु राजा ययाति तब भोगपूर्ण राजवैभव का सुदीर्घ जीवन व्यतित करके अपने साम्राज्य को त्यागकर वानप्रस्थ जीवन जीने लगे थे। अपनी सुपुत्री माधवी का स्वयंवर ही अब उनके जीवन का अंतिम दे होता है। ऐसे में गालव को वे 800 अश्वमेधी घोड़े कहाँ से दे पाएंगे। गालव की सहायता करने में असमर्थ राजा ययाति अपनी इकलौती पुत्री माधवी को दान में दे देते हैं। बड़ा विश्वास जताते हुए गालव से कहते हैं कि माधवी तुम्हारी प्रतिज्ञा पूर्ति में सहायता कर सकती है। इसे चिरकौमार्य का वरदान जो प्राप्त हुआ है। गालव और माधवी जंगल नदी घाटियों को लाँगते हुए नगर नगर डगर डगर पार करते हुए अयोध्या पहुंचते हैं। माधवी की जन्मकुंडली को देखकर राजज्योतिषि ने बताया था कि इसके गर्भ से जो बालक जन्म लेगा, वह इस धरती का चक्रवर्ती राजा बनेगा। राजकन्या महादेवी की इस विशेषता को गालव जब अयोध्या के राजा हर्यश्च से बताता है तो वे मान जाते हैं और माधवी को अपने रनिवास में रख लेते हैं। उनमें यह समझौता हो जाता है कि 1 वर्ष के पश्चात पुत्र प्राप्ति के बाद 200 अश्वमेधी घोड़ों के साथ माधवी को भी वापस भेज दिया जाएगा। निर्धारित कालावधि में

राजा हर्यश्च को माधवी से वसुमना पुत्र की प्राप्ति होती है। 200 अश्वमेधि घोड़ों के साथ माधुरी को भी लौटाया जाता है। गालव को अपनी प्रतिज्ञा पूर्ति के लिए अभी 600 घोड़ों की कमी होती है। आगे चलकर वे दोनों काशी नरेश दिवोदास और भोजनगर के राजा उसीनर से भी इसी प्रकार 200-200 घोडे पाकर उन्हें क्रमशः प्रतर्दन व शिवि नामक राजकुमारों को प्रदान करते हैं। अंतिम 200 अश्वमेधी घोड़ों को पाने के लिए माधवी बिना गालव को बताए विश्वामित्र के आश्रम में पहुंचती है। माधवी के अनुनय विनय के पश्चात ऋषि विश्वामित्र ने अपनी गुरु दक्षिणा को पूर्ण मानकर शिष्य गालव को उसकी प्रतिज्ञापूर्ति में सफल बताते हैं। इस प्रकार नाटक के अंतिम दृश्य में माधवी, गालव, ऋषि विश्वामित्रादि अनेकों राजा-राजकुमार दानवीर ययाति के आश्रम में पहुंचते हैं, जहाँ माधवी का स्वयंवर एवं गालव का दीक्षांत समारोह दोनों का एकसाथ आयोजन होना है। मुनिकुमार गालव का माधवी को अपने गुरु विश्वामित्र की पत्नी रहने के कारण गुरुमाता मानना और अपनी जीवनसंगिनी के रूप में अस्विकार करना, पाठकों को जिज्ञासा में छोड़ देता है कि माधवी का जीवन कौन संभालेगा? 12 विद्याओं में पारंगत गालव का दीक्षांत समारोह तो संपन्न हो जाता है, परंतु जिस माधवी ने गालव की प्रतिज्ञापूर्ति में अपना योगदान दिया था, उसी माधवी के प्रति गालव ने अपना दायित्व नहीं निभाया। पाठकों को यही बात खटक रही थी कि नाटककार भीष्म साहनी ने नाटक की कथा को पूर्णविराम दिया।

विषय की प्रासंगिकता:

मानव कुल की सभ्यता का विकास अनवरत चलता आया है। अनादि काल से आज के विज्ञान से विकसित इस वर्तमान समय तक मानव समूह ने अनेकों उत्थान पतन देखें हैं। इस संसार में सर्वदेश और सर्वकाल में सज्जनों-दुर्जनों का वास रहा है। श्रेष्ठो-दुष्टों में सदा ही विरोध-संघर्ष चलता रहा है। दोनों के अनुपात में अंतर के अनुसार उस कालखंड का नामकरण होता आया है। जैसे सतयुग त्रेतायुग द्वापरयुग और आज का कलियुग। कलियुग को हम कला का युग भी कह सकते हैं। इस मानवकुल ने प्रगति के पथ पर चलकर आते वक्त यह देखता आया है कि जब-जब जिस-जिस चीज का परिमाण बढ़ता है, तब-तब उस-उस वस्तु का मूल्य कम होता है और जब कभी जिस किसी वस्तु का परिमाण घटता है, तो उस कालावधी में उसका महत्व (मूल्य-कीमत) बढ़ता है। जब-जब इस मानव समाज को पथभ्रष्ट होता देखा, तब-तब तत्कालिन साहित्यकारों ने मानवता की गरिमा को संवारने का प्रशंसनीय कार्य किया है। नाटककार भीष्म साहनी ने भी अपने समय में जब अधिकतम युवकों-युवतियों को भ्रष्ट, वचन-भ्रष्ट दुराचारी, कृतघ्न बनते देखें होंगे, तब उन्हें इतिहास के पाताल में डूबे हुए मोतीसम माधवी व गालव स्मरण हुए होंगे। आज के समाज में कृतज्ञता एवं वचनबद्धता लगभग नहीं के बराबर पाई जाती है। आज के युवकों में रचनात्मक विश्वास, कृतज्ञता वचनबद्धता जैसे भावों को प्रेषित करना इस विषय को प्रासंगिक बनाता है।

संकेत शब्द:

कर्तव्यपरायणता, दिव्यचक्षु, भद्रपुरुष, नतमस्तक, वनस्थली, जलधारा, व्यथा-गाथा, देश-देशांतर मनोकामना, प्रातकाल, पूजा-आराधना, आर्यावर्त, सुखैश्वर्य आगंतुक, पारंगत, स्वर्गवासिनी, क्षमा-याचना, अभ्यर्थना मुट्ठी भर तंडुल, पुलकित होना, निस्सहायता नि:संकोच, आत्मसम्मान, परिचारक दानवीरता, दानस्वरूप, अभिभूत अभिभावक, राजज्योतिषी, सर्वोपरि, वनवासिनी, मुनिकुमार, यज्ञाहुति, राजकन्या, चिरकौमार्य, अश्वमेधी, ऋणमुक्त, दैवी लक्षणोवाली, पटरानी, वचन के

धनी, चक्रवर्ति राजा, दर्शन-मार्गदर्शन का निर्देशन दानसीलता, राज्याभिषेक, श्वेतवर्णी श्यामकर्णी, पारंगत, विडंबना आकाशवाणी, दायित्व, प्रलोभन, विश्वासघात, रनिवास, अंत:पुर, क्षुद्रविचार, महत्वाकांक्षी, सद्भावना, शिरोधार्य, भाग्यवान, पुष्पमाला, भविष्यवाणी, मनोकामना, नगर-नगर, डगर-डगर, पश्चाताप, उत्तराखंड, विचित्र-यात्रा, मँझधार, लाँघना, अनुनय-विनय, सिद्धि विमूख, अभ्यर्थिनी, भाव-भंगिमा, दर्प, विराजमान, सौदा, राजपाट, आश्रमवासी, पुत्रलाभ, वार्तालाप, राजसिंहासन, निरीक्षण, तोलमोलकर सील-स्वभाव, स्तनयुगल, नितंब, निश्चेष्ट, जुटाना, अश्वशाला, न्यायप्रिय, प्रस्ताव, सुझाव, अनुष्ठान, ब्रह्मचारी, कारावास, वस्त्राभूषण, उत्तरीय, बाँदी, धाय, परिचारिका, राजप्रासाद, धर्मग्रंथ, सर्वांगसुंदरी, अर्धांगिनी, आवेगो-उद्वेगों, स्वर्णाक्षर, सुनिश्चित, अनिश्चित, उत्तेजित होना, दान में स्वार्थ का खोट, गिड़गिड़ाना, राजधानी, नेपथ्य, आमंत्रित, जनसाधारण, बीसियों, मुकुट, कंठहार, युवराज, गरिमा, शिथिलता, राजमहल, थरथराती, जन्मोत्सव, अनुबंध, अतिथि मंडप, प्रभात वेला, मंत्रमुग्ध, आदर्श-शिष्य, कटुता, पुरोहित, छटपटाती-सी,
तिल-तिलकर काटना, नरेश, उत्तीर्ण, नाक-नक्श, चिल्लाती-रोती, अल्हादपूर्ण, इहलोक-परलोक, उत्तराधिकारी, रसिक-राजा, चलते-चलाते, पुत्रहीन, कलाप्रेमी, सोने की शय्या, दुबला-पतला, विदूषक, अट्टालिकाएँ, खचाखच, निहारना, सोलह-श्रृंगार, काम-क्रीड़ा, शयन-कक्ष, दुर्भिक्ष, महामारी, नतमस्तक प्रणाम, जीवन-यात्रा, काल-कोठरी, लपेट-चपेट, जल-प्रवाह, दान-स्वरूप, विचलित, गुरु-भाई, दुर्दशा, एकाधिकार, क्षमा-याचना, चिंतामग्न, जयमाला, प्रकाश-वृत्त, झिलमिलाना, जगमगाना, हड़बड़ाना, डगमगाना, दुस्वप्न, मंगलसूत्र, भीमकाय, भयाकुल, हाहाकार, नवजात, राज्याधिकारी, तदनंतर, अनहोनी, किंकर्तव्यविमूढ़, रुदन, ऊंचे आदर्शोंवाली, आश्वासन, निष्प्रयोजन, दास-वृत्ति, थके-माँदे, शपथ लेना, विश्वास करना, असहाय, शेष, संवरण, ठिठककर, अंतर्धान, वनस्थली, आगंतुक, तलहटी, धूम, राजप्रासाद, हवन-यज्ञ, मुस्कुराकर, तापस-तापसी, वितस्ता, सुरभि उत्तराखंड, अयोध्या, भोजनगर विधि-नियम, पश्चाताप, कृतज्ञ-कृतघ्न, स्तंभित-से, कथावाचक, परिचारिका, दंभी-हठी-अभिमानी, पुष्प-वर्षा, दीक्षांत-समारोह, फूलों-वंदनवारों, ईर्ष्या, प्रार्थियों की पाँत, राजसी-ठाठ, शंखनाद, अगुवाई, सौजन्यपूर्ण, निमित्त, मर्यादा-पालन, मोहपाश, धुन के पक्के, निष्ठावाले, तपस्या, विद्यार्थी, सील-संस्कार, दिल बैठ जाना, कौतुक, अंतिम-चरण, आचरण, कंचन, मृगशावक, वरदहस्त, अनुग्रह, आर्य-संस्कृति, भव्य-प्रासाद, धीर-गंभीर, आयोजन, स्वस्तिवाचन, स्तोत्रादि, मंत्रोच्चारण, कंदमूल, कन्यादान, राजगण, पीठ-थपथपाना, नियमों का उल्लंघन, अधीरता, अधेड़-उम्र, अनाकर्षक, मुटिया, भौचक-सा, प्रसव-पीड़ा, औपचारिकता, चहकना, रोम-रोम पुलकित होना, मन-ही-मन हँसना, अकिंचन, वासनाओं का कुलबुलाना, द्विधा, बुढ़ा जाना, याज्ञिक, संचालक।

पात्र परिचय:

माधवी: राजा ययाति की एकमात्र पुत्री, जिसे चिर कौमार्य का वरदान प्राप्त था, जिसकी जन्मकुंडली देखकर राजज्योतिषियों ने इसे नारीसुलभ सर्वलक्षणों से संपन्न देखकर राजकन्या माना था। और भविष्यवाणी की थी कि इसके गर्भ से जो बालक जन्म लेगा, वह बड़ा होकर आगे चलकर चक्रवर्ती राजा बनेगा।

गालव: ऋषि विश्वामित्र का शिष्य, जो उनके आश्रम में 12 वर्षों तक रहकर 12 विद्याओं में पारंगत हुआ था। जो विद्या प्राप्ति के तदनंतर गुरु-दक्षिणा देकर ही घर लौटने का जिद करता है और अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करने के लिए अनेकों वर्ष जंगल, घाटी, नगर-नगर, डगर-डगर भटकता फिरता है। अंततः जिसने माधवी के माध्यम से गुरु दक्षिणा पहुंचाई।

ययाति: आर्यावर्त के इतिहास प्रसिद्ध चंद्रवंशी राजा, जो अपने आपको धरती के सर्वश्रेष्ठ दानवीर समझते रहे।

विश्वामित्र: आर्यावर्त के इतिहास प्रसिद्ध ऋषिमुनि, जिन्होंने अपने जिद्दी शिष्य गालव को गुरु-दक्षिणा के रूप में 800 अश्वमेधी घोड़ों की माँग की थी।

अन्य पात्र: अयोध्या के राजा हर्यश्च उनका पुत्र वसुमाना, काशी नरेश देवदास और उनका पुत्र प्रतर्दन, भोजनगर के राजा उसीनर और उनका पुत्र शिवि, राजज्योतिषी, कथावाचक, संचालक, परिचारक, तापस-तापसी, बाँधी-धाय, आश्रमवासी आदि।

माधवी नाटक की कथावस्तु:

माधवी नाटक की पूरी कथावस्तु 3 अंकों में विभाजित है। पहले अंक में तीन दृश्य, दूसरे अंक में चार दृश्य और अंतिम तीसरे अंक में फिर तीन दृश्य विश्लेषित हैं। कर्तव्यपालन मनुष्य का सबसे बड़ा गुण माना गया है। नाटककार भीष्म साहनी ने इसी गुण को माधवी नाटक का कथानक बनाया है। प्रत्येक मनुष्य यदि अपने कर्तव्य का पालन उचित ढंग से करता रहे, तो जीवन की सार्थकता बेशक संपन्न होगी। कर्तव्य अपने परिवार के प्रति, समाज, देश और संपूर्ण जीवराशि के प्रति। माधवी नाटक की शुरुआत कथावाचक द्वारा मानवीय गुणों के विश्लेषण के साथ होती है, जहाँ कर्तव्यपालन को मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ गुण बताया जाता है। गुरु विश्वामित्र के आश्रम में 12 वर्षों तक रहकर 12 विद्याओं में पारंगत होने के पश्चात उनका शिष्य मुनिकुमार गालव गुरु-दक्षिणा देने का हट करता है। गुरु अपने प्रिय शिष्य को बहुत समझाने की कोशिश करते हैं, परंतु शिष्य मानता नहीं। क्रोधित विश्वामित्र 800 अश्वमेधी घोड़े दक्षिणा में माँगते हैं। अपने गुरु ऐसी गुरु-दक्षिणा माँगेंगे, यह गालव ने कभी सोचा भी नहीं था। दक्षिणा पहुंचाने में जब वह अपने आपको असमर्थ पाता है, तो आत्महत्या करने का निश्चय करता है। देवलोक में ध्यानमग्न बैठे विष्णु भगवान अपने दिव्य चक्षुओं से यह देखते हैं कि पृथ्वी पर उनका एक भक्त आर्यावर्त के गंगातट पर आत्महत्या कर रहा है। भगवान विष्णु तत्काल अपने वाहन गरुड़ से कहते हैं- **"हे गरुड़, हमारा एक भक्त संकट में है। वह गंगा में कूदकर आत्महत्या करने जा रहा है और उसने हमें याद किया है।"** पक्षीराज गरुड़ अविलंब धरती पर पहुंचकर गालव से पूछता है- **"आपको क्या कष्ट है मुनिकुमार?"** प्रत्युत्तर में गालव अपनी प्रतिज्ञापूर्ति की असमर्थता इस प्रकार बताता है- **"मेरे जीवन की कोई सार्थकता नहीं। मैंने अपने गुरु को एक वचन दिया था, उसे मैं पूरा नहीं कर पाया। मैं अपने गुरु के लिए गुरु-दक्षिणा नहीं जुटा पाया हूँ। मुझ जैसे पातकी को मर जाना ही उचित है।"** इसे सुनकर गरुड़ गालव को सुझाव देते हैं कि वह महाराज ययाति से सहायता माँगे, जिनके द्वार से कोई कभी खाली हाथ नहीं लौटा। ययाति गालव की मनोकामना आवश्य पूरी करेंगे। डूबते को तिनके का सहारा मिला। गालव उसी प्रकार ययाति के आश्रम की ओर भागा, जिस प्रकार प्यासा पानी की ओर दौडता है। उसके मन में राजा ययाति से सहायता पाने का पूरा विश्वास जागता है। गालव अपनी व्यथा की कथा ऐसे ययाति से बताता है, जिसने अपना राजपाट तो पीछे छोड़ आया है, पर मन की अशांति अपने साथ ले आया है। **"मैं ऋषि विश्वामित्र का शिष्य हूँ। आज्ञा हो तो अपनी प्रार्थना आपके सम्मुख रखूँ। मैं 12 वर्षों तक ऋषि विश्वामित्र के आश्रम में रहकर विद्या ग्रहण करके 12 विद्याओं में पारंगत हूँ। गुरु-दक्षिणा देना है। 800 अश्वमेधी घोड़े चाहिए।"** दानवीर राजा ययाति यह तो मानते हैं कि गुरु-दक्षिणा देना शिष्य का पुण्य-कर्तव्य है। परंतु वे यह भी बताते हैं कि गुरु का दक्षिणा के रूप में 800 अश्वमेधी घोड़े माँगना और शिष्य का उस दक्षिणा को पहुंचाने की प्रतिज्ञा करना, दोनों अनुचित हैं। **"महाराज ययाति ने राजपाट त्याग दिया है, मैं जानता हूँ, पर मैं यह भी जानता हूँ कि यशस्वी दानवीर ययाति ही मेरी अभ्यर्थना का कोई उपाय कर सकते हैं। केवल मैं ही नहीं महाराज, समस्त आर्यावर्त ऐसा सोचता है।"** तब ययाति कहते हैं- **"हम तुम्हारी निष्ठा की प्रशंसा करते हैं, पर अब मैं राजा नहीं, आश्रमवासी हूँ।"** तब गालव कहता है- **"मैं वचनबद्ध हूँ। महाराज, गुरु-दक्षिणा में 800 अश्वमेधी घोड़े देने की शपथ ले चुका हूँ।"**

ययाति का कन्यादान:

जैसे मरुस्थल में भटकने वाला व्यक्ति झरने की ओर भागता है, वैसे ही हताश व्यक्ति ययाति के द्वार की ओर उन्मुख होता है। ऐसे में गालव खाली हाथ कैसे लौट सकता है? ययाति अपनी एकमात्र गुणवती युवती कन्या गालव को दान में

देते हुए बताते हैं- "इसे पाकर कोई भी राजा तुम्हें 800 अश्वमेधी घोड़े दे देगा। राजज्योतिषियों ने माधवी के लक्षणों की जांच की है। इसके गर्भ से उत्पन्न होनेवाला बालक चक्रवर्ती राजा बनेगा। इसे चिरकौमार्य का वर प्राप्त है। जाओ मुनिकुमार तुम्हारा मनोरथ पूरा हो।" आगे वह माधवी से कहते हैं- **"धर्म सदा सर्वोपरि है। तुम मनिकुमार के साथ जाओ। मैंने तुम्हें दान में दिया है। इस युवक की अभ्यर्थना को मानते हुए मैंने तुम्हें दान में दिया है। यह मनिकुमार बड़ा कर्तव्यपरायण है। यह अपने गुरु के प्रति उतना ही निष्ठावान हैं, जितना तुम अपने पिता के प्रति। वचन का धनी है। जाओ माधवी तुम्हारा भाग्य तुम्हारे साथ हो।"** फिर गालव से कहते हैं- "माधवी मेरी पुत्री है। मैंने अपना कर्तव्य निभाया है। वह भी पिता के प्रति अपना कर्तव्य निभाएगी। आगे क्या होगा, यह हमारे वश में नहीं है। केवल धर्म किए जाना ही हमारे वश में है। भविष्य के परदे में न कभी किसी ने झाँककर देख पाया है और ना कभी देख पाएगा। माधवी-गालव घोड़ों की खोज में निकल पड़ते हैं। गालव सोचता रहता है कि मुझे गुरु मेरे हठ का दंड देना चाहते हैं। एक विद्यार्थी को 800 अश्वमेधी घोड़े माँगकर मुझे लज्जित करना चाहते हैं। बीच में माधवी कहने लगती है- **"मैं तुम्हारी गुरु-दक्षिणा का निमित्त मात्र हूँ। पिता ने आदेश दिया तो तुम्हारे साथ चली आई, तुम आदेश दोगे तो किसी राजा के रनिवास में चली जाऊंगी। पिताजी का आदेश शिरोधार्य है। हम केवल अपना-अपना कर्तव्य निभाएंगे। मैं अपने पिता के प्रति, तुम अपने गुरू के प्रति। हमारे जीवन की यह यात्रा विचित्र होगी। तुम्हारी यात्रा का अंतिम चरण ही मेरी जीवनयात्रा का पहला चरण होगा। जहाँ तुम्हारी यात्रा समाप्त होगी, वहाँ से मेरी यात्रा आरंभ होगी। मैं दान में दी हुई चीज हूँ। तुम्हारे लक्ष्य की सिद्धि में सहायता होगी। हमारे भाग्य में दूसरा विकल्प नहीं है। चलो उत्तराखंड की ओर।"** माधवी और गालव अयोध्या के राजा हर्यश्च के दरबार में पहुंचते हैं। राजा द्वारा अनादरपूर्ण अपमानजनक शब्दों को सुनना पड़ता है। जैसे- **"यों देखने में इसे राजकन्या कौन कहेगा? वेशभूषा से तो कोई भीलनी जान पड़ती है। इधर सामने आओ युवती। अब राजकुमारियों-सा दर्प तुम्हें नहीं सुहाता। दान में दी हुई युवती में अकड़ किस बात की। यहाँ तुम एक अभ्यर्थिनी हो।"** और राजज्योतिषी को बुलाकर राजकन्या के लक्षणों की जाँच की जाती है। हर्यश्च सौदा करते वक्त राजा ययाति व ऋषि विश्वामित्र के प्रति भी यूँ कहते हैं।- **"अपनी कन्या का स्वयंवर रचानेवाले महाराज ययाति राजपाट त्यागकर आश्रमवासी बन गए और आश्रमवासी ऋषि विश्वामित्र अपने शिष्य से 800 अश्वमेधी घोड़े गुरु-दक्षिणा में पाकर राजपाट करना चाहते हैं।"**

राजज्योतिषी माधवी की जाँच करके उसके लक्षणों का राजा हर्यश्च को इस प्रकार वर्णन-विश्लेषण करके सलाह सुझाव देते हैं। "महाराज ऐसे नख-शिख बड़े विरल होते हैं। यह युवती राजकन्या ही नहीं, यह एक दिन चक्रवर्ती राजा को जन्म देगी। महाराज आपकी मनोकामना पूरी होगी। जिस युवती की पीठ सीधी हो, स्तनयुगल और नितंब ऊपर को उठे हो, कपोल तथा नेत्रों के कोए ऊँचे हो, कमर पतली हो, केश-दांत-हाथ-पैर की अंगुलियाँ कोमल हो, कंठश्वर गंभीर हो, नाभि गहरी हो, स्वभाव स्थिर-गंभीर हो, तालू, जीभ, होंठ, हथेली और नेत्रों के कोए लाल हो, ज्योतिषग्रंथों में कहा है इन लक्षणों से युक्त युवती चक्रवर्ती राजा को जन्म देनेवाली होगी। ययातिपुत्री में सारे शुभ लक्षणों को पाकर राजा हर्यश्च उसे अपनाने और 1 वर्ष के उपरांत पुत्रप्राप्ति के पश्चात 200 अश्वमेधी घोड़ों के साथ वापस लौटाने का सौदा-समझौता कर देते हैं। गालव इस प्रकार माधवी को राजा हर्यश्च को सौंपकर शेष छह सौ घोड़ों की व्यवस्था करने निकल जाता है।

धर्मग्रंथों में स्त्री की तुलना पृथ्वी से की गई है। स्त्री की शक्ति सेवा में है। पुरुष महत्वकांक्षी होता है। पर स्त्री का प्रमुख गुण त्याग है, सेवा है। राजा ययाति संसारी आवेगों उद्वेगों से दूर आश्रमवासी हैं, जो कर्तव्य की आग में बहुत तप चुका है। वह सोचता है- मैं इतना दान दूँगा, इतना दान दूँगा कि लोग कर्ण को भूल जाएंगे। अपनी बेटी को दान में देकर ययाति ने असंभव को संभव बना दिया है। पर भाग्य बली है। मनुष्य कुछ नहीं कर सकता। प्रत्येक व्यक्ति अपना भाग्य स्वयं लेकर आता है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के भाग्य का निर्णय नहीं कर सकता। वह केवल अपना कर्तव्य निभा सकता है। माधवी-गालव के प्रस्थान के पश्चात ययाति इधर सोचने लगते हैं कि गालव गुरूदक्षिणा का हठ छोड़ दें अपनी प्रतिज्ञा को मोड दें, तो उचित होगा। ऐसा दान और ऐसी प्रतिज्ञा अनुचित है।

मातृत्व की परीक्षा:

समय के साथ अयोध्या के महाराज हर्यश्च को संतान प्राप्ति होती है, जिसका नाम वसुमना रखा जाता है। परंतु वसुमाना माधवी का नहीं, केवल हर्यश्च का पुत्र है और अयोध्या का युवराज है। माधवी वसुमाना की माँ नहीं, केवल जन्म देनेवाली स्त्री है, किराएवाली। उसके कोख से जन्म लेनेवाला बच्चा भी उसका अपना नहीं। सुख-शांति की चाह ही संभवतः इस मानव जीवन का आधार है। सब सुख के लिए जी रहे हैं, बिना शांति का जीवन। राजा, प्रजा, ऋषि सभी बेचैन हैं, परेशान हैं। ययाति, माधवी, गालव, विश्वामित्र सब के सब। कर्तव्यपरायणता अर्थात दायित्व निभाना आसान नहीं होता। एक कर्तव्य दानवीर राजा ययाति का, एक कर्तव्य मुनिकुमार गालव का, और दोनों के कर्तव्यों को संपन्न करती है एक राजकन्या माधवी। एक पिता अपनी एकमात्र बेटी का दान देकर अपनी दानवीरता का पालन करता है, तो एक शिष्य अपने गुरु की गुरुदक्षिणा पहुँचाकर आदर्श बनता है। पहला दानवीर बनता है और दूसरा आदर्श शिष्य। परंतु एक स्त्री जिन्होंने इनकी महानता को बरकरार रखने का दायित्व निभाया अपने पवित्र मातृत्व की बलि देकर। गालव जब माधवी से कहता है कि तुम स्वतंत्र हो, तब माधवी की प्रतिक्रिया देखिए- **"कैसी स्वतंत्रता? उन दीवारों के पीछे मेरा बालक मुँह खोले मेरा स्तन ढूंढ रहा है। जो माँ अपने बच्चे को छाती से लगा पाए, वही स्वतंत्र होती है।"**

कर्तव्य में शिष्टता:

गालव माधवी को समझाता है कि मनुष्य अपने कर्तव्य को बोझ न समझे। स्त्री के स्वर में कटुता नहीं, मधुरता ही शोभा देती है। दु:ख में भी कर्तव्य को अपनी शिष्टता नहीं खोनी चाहिए। माधवी का अयोध्या नरेश को लंपट कहना गालव को भाता नहीं। निष्ठा और दृढता के साथ वचन को निभाना ही वचनबद्धता है।

सहनशीलता की अग्निपरीक्षा:

दानव को मानव और मानव को महामानव बनाने में सहनशीलता को विशेष गुण माना गया है। सही भी है कि ठंडा लोहा ही गरम लोहे को काटता है। गालव की हालत देखिए- **"मैं इस बात की कल्पना से ही सिहर उठता था कि तुम एक पराए पुरुष के साथ सहवास कर रही हो। पिछले 1 वर्ष में मैं तीन बार छटपटाता हुआ तुम्हारे प्रासाद के बाहर आया हूँ। एक ओर घोड़ों के लिए भटकन, दूसरी ओर ईर्ष्या की दहकती आग। मैंने समय को तिल-तिल करके काटा है।"** अपनी स्त्री की मर्यादा की रक्षा करना पुरुष का पुरुषार्थ है। ऐसा जो नहीं कर पाता वही तो नामर्द है। माधवी नाटक में ययाती, गालव व माधवी तीनों अपनी सहनशीलता के मिसाल हैं। माधवी कहती हैं- **"मैं बार-बार झरोखों के पास जा खड़ी होती और मेरी आँखें तुम्हें ढूँढने लगती। तुम्हारा चेहरा मेरी आंखों के सामने आ जाता। मैं मन में सोचा करती यदि गालव से मेरा पुत्र उत्पन्न हुआ होता तो क्या मैं इतना रोती चिल्लाती? नहीं, तब तो मैं सारी पीड़ा हँसते-हँसते सहन कर लेती।"** अपनी कोख से उत्पन्न राजा हर्यश्च की संतान के चेहरे में माधवी गालव के नाक-नक्श ढूँढती है। वह सोचती है कि उसके प्रेम की

कठिन परीक्षा चल रही है। क्या वह अपनी इस परीक्षा में उत्तीर्ण हो पाएगी? गालव और ययाति अपनी प्रतिज्ञाओं का पालन स्वयं नहीं कर पाते। उनके कर्तव्यों को माधवी पूरा करती है, जिसकी अपनी कोई निजी प्रतिज्ञा नहीं होती।

पुत्रहीन राजा रंक समान:

अयोध्या को छोडकर गालव और माधवी चलते-चलते देवनगरी काशी पहुंचते हैं। वहाँ का रसिक राजा दिवोदास सोने की शय्या पर सोते हुए भी पुत्र के लिए लालायित था, जिसके रनिवास में 35 रानियाँ थी, जिन्हें पुत्री-लाभ तो हुआ था और 17 पुत्रियाँ रनिवास की शोभा बढ़ा रही थी, पर पुत्रलाभ नहीं हुआ था। काशी नगर की अट्टालिकाएँ स्त्रियों से हमेशा खचाखच भरी रहती हैं। माधवी को राजा दिवोदास कहता है- **"तुम भी हमारी ओर खिंची चली आई हो, जैसे सावित्री सत्यवान की ओर, जैसे लक्ष्मी नारायण की ओर, रुक्मणी कृष्ण की ओर, शकुंतला दुष्यंत की ओर, जानकी राम की ओर, अदिति कश्यप की ओर और गंगा सागर की ओर खिंची आती है।"** राजा दिवोदास सुंदरियों के बारे में कहता है- **"स्त्रियाँ श्रृंगार तो बहुत करती है पर काम-क्रीडा नहीं जानती। हमारी पहली रानी जब पहली बार शयनकक्ष में आई, तो सभी आभूषण पहन कर आई।"** मुनिराज भृगु की ओर से पधारे हुए एक साधु बताता है कि आहुतिपूर्ण यज्ञ संपन्न हुआ। देवगण प्रसन्न हैं। ऋषि भृगु की आशीर्वादपूर्ण भविष्यवाणी हुई है कि राजा दिवोदास के वंश में शीघ्र ही वृद्धि होगी। अपने वंश की फलती-फूलती भविष्यवाणी सुनकर राजा दिवोदास महाराज को अपना नतमस्तक प्रणाम करता है और प्रफुल्लित होकर माधवी को रनिवास में रख लेने के लिए मान लेता है। **"पुत्र प्राप्ति के पश्चात गालव को 200 अश्वमेधी घोड़े दे देंगे, पूरे 200 घोड़े, न एक कम, न एक ज्यादा।"**

विलक्षण जीवन-यात्रा:

विलक्षण लोगों की जीवन-यात्रा कभी सीधे रास्ते से नहीं होती। वह सदा टेढ़े-मेढ़े रास्ते से चलती है। विश्वामित्र के आश्रम में प्रजा चर्चा करने लगती है कि ऋषि होकर अश्वमेधी घोड़े लेकर क्या करेंगे? अचानक श्वेतवर्णी-श्यामकर्णी घोडे सरपट दौड़ते आश्रम की ओर आने का नजारा देखते हैं। एक दूसरे को पूछने लगते हैं कि ये किनके घोड़े हैं, कहाँ से आ रहे हैं, कहाँ जा रहे हैं। उन्हीं में से एक आदमी बताता है कि पुराने काल में एक इतिहास प्रसिद्ध राजा गाधि ने यज्ञ रचाया था, जिन्होंने ब्राह्मणों को 1000 घोड़े दान स्वरूप दिया था। ब्राह्मण लोग उन घोडों को उत्तराखंड में बेचा करते थे। बचे हुए बाकी घोडे लेकर जब वे लौट रहे थे, तो वितस्ता में बाढ़ आया था। कई घोड़े बह गए, डूब मरे। बचे हुए घोड़े यही होंगे। आश्रम में विश्वामित्र और गालव का बालमित्र **तापस** में चर्चा चलती है कि विश्वामित्र अपने शिष्य गालव को दक्षिणा में 800 अश्वमेधी घोड़े माँगने का प्रयोजन क्या है? तापस गालव को अपना गुरुभाई मानता है। अत: उसकी दुर्दशा उससे देखी नहीं जाती। तापस विश्वामित्र से बिंती करता है कि वह गालव को अपनी दक्षिणा से मुक्त करके उसे जीवनदान प्रदान करें। परंतु महत्वाकांक्षी गालव कठिन परीक्षा में उत्तीर्ण होगा इसी विश्वास के साथ विश्वामित्र कहते हैं- **"तुम गालव को नहीं जानते, वह बड़ा स्वाभिमानी युवक है। वह इसे अपना अपमान समझता है।"**

दंभ और विनाश

महत्वाकांक्षी लोगों में यदि दंभ पाया जाए, तो वह उनके विनाश का कारण बनता है। स्वाभिमान का एक स्टेज यह भी होता है कि कोई हम पर दया दिखाए, तो हम उसे अपना अपमान समझने लगते हैं। परंतु तापस की स्थिति है कि वह न गुरु को सुझाव दे पा रहा है और न ही मित्र गालव को मदद कर पा रहा है। "मुझे क्षमा करें महाराज, मेरा मन अत्यंत दु:खी है। गालव मेरा मित्र है। मैं उसे आत्महत्या करता हुआ नहीं देख सकता।" नाटक के तीसरे अंक के पहले दृश्य में

माधवी भोजनगर के वृद्ध राजा उसीनर को उनकी संतान शिवि को सौंपकर फिर से गालव के साथ निकल पड़ती है। अचानक एक दिन वह गालव को छोड़कर कहीं घाटियों में भाग जाती है। किंकर्तव्यविमूढ गालव के साथ यह अनहोनी घटना घटती है। गालव सोचता है- **"नारी भगवान की ऐसी सृष्टि है कि जो अपनी कोमलता के कारण सदा किसी न किसी का सहारा लिए रहती है। जैसे लता को वृक्ष का सहारा चाहिए, वैसे ही स्त्री को पुरुष का सहारा।"** संशय पुरुष के व्यक्तित्व का अभिन्न गुण है। गालव यह भी सोचता है कि शायद माधवी उसे त्यागकर तीनों में से किसी राजा के पास लौट गई होगी, जो माधवी को अपने राजमहल की पटरानी बनाकर रख लेने के लिए रेडी थे। गालव की कल्पना देखिए- **"स्त्री रहस्य की गुथली होती है, उसे देवता नहीं समझ पाए, तो मनुष्य क्या समझेगा। जो मनुष्य स्त्री को समझ पाया है, समझिए कि वह संसार की सारी विद्याओं में पारंगत हो गया। पुरुष को भगवान ने धीर-गंभीर बनाया है और स्त्री के स्वभाव में चंचलता भर दी है। नाटककार भीष्म साहनी जी का मानना है कि स्त्री की चंचलता पर पुरुष का अंकुश सदा बने रहना चाहिए, इसमें अंततः स्त्री का ही लाभ है।"**

माधवी से बिछुडकर गालव पछताने लगता है कि उसने माधवी पर विश्वास करके धोखा खाया है। ऊँचे आदर्शोंवाली युवती की मति बदलते देर नहीं लगती। उसने माधवी के शपथ-आश्वासनों पर विश्वास किया था। उसने सोचा नहीं था कि माधवी उसे इस प्रकार मँझधार में छोड जाएगी। माधवी पर विश्वास करके उसने पत्तों की नाव के सहारे सागर पार करने की चेष्टा की थी। तब गालव को उसका मित्र तापस समझाता है कि मधवी गालव की प्रतिज्ञा पूरी करने का साधन है और वह अपना योगदान देकर रहेगी त्याग की देवि जो है। परंतु गालव अपने नकारात्मक विचारों में खोता जाता है। **"तापस मैं कहीं का नहीं रहा। मैं 600 घोड़े गुरुदेव को जुटा चुका हूँ। शेष केवल 200 घोड़ों की बात रह गई है। यदि मैं 600 घोड़ों का प्रबंध कर सकता हूँ, तो मैं 800 का भी कर सकता हूँ। अगर मुझे दासवृत्ति भी करनी पड़ेगी, तो भी शेष 200 घोडे मैं जुटाऊँगा और सच्चे साधक का पद ग्रहण करूँगा।"** तब तापस की सोच देखिए- **"महत्वकांक्षी लोग परिस्थितियों को अपने अनुकूल ढालना चाहते हैं, स्वयं उनके अनुकूल नहीं ढलते।"**

माधवी को जब यह कनफॉम हो जाता है कि गालव अब शेष 200 अश्वमेधी घोड़े जुटा नहीं सकता, तो वह स्वयं चलकर विश्वामित्र के आश्रम में पहुँचती है। **"महाराज वह शेष घोडों के लिए बहुत भटक चुका है। आप तो जानते हैं कि इतिहासप्रसिद्ध राजा गाधि द्वारा ब्राह्मणों को यज्ञ के अवसर पर दान में दिए हुए 1000 अश्वमेधी घोड़ो में से, 400 घोड़े वितस्ता में बह गए थे और बाकी 600 घोड़े अलरेडी आपके आश्रम में पहुँच गए हैं। पर हाँ, मैं क्षमा-याचना करने नहीं आई हूँ। मैं विशिष्ट लक्षणोंवाली राजकन्या हूँ। महाराज आपको भी मुझसे पुत्रलाभ होगा। 600 घोड़े ग्रहण करके शेष दो सौ घोड़ों के लिए आप मुझे अपने पास रख ले। मैं आश्रम के सभी नियम जानती हूँ। गालव ने गुरु-दक्षिणा देने की प्रतिज्ञा की है। उसकी प्रतिज्ञा मेरी प्रतिज्ञा है। महाराज गालव से प्रेम करते हुए मैं 3 राजाओं के पास रह चुकी हूँ। गुरु-दक्षिणा नहीं जुटा पाया, तो वह आत्महत्या कर लेगा। सारा वक्त उसे गुरु-दक्षिणा की ही चिंता रहती है।"** माधवी के इन शब्दों से कनविन्स होकर विश्वामित्र माधवी को अपनाते हुए कहता है- **"मैंने गुरु-दक्षिणा पा ली माधवी। मैं गालव का दंभ तोड़ना चाहता था, तुमने मेरा दंभ तोड़ दिया।"** उपर्युक्त इस संवाद से यह स्पष्ट हो जाता है कि दंभी व्यक्ति को पश्चताप तो होगा ही, चाहे अंत में ही सही। शिष्य हो या गुरु, मनुष्य हो, तो अहंकार होगा और अहंकारी को पश्चाताप होना स्वाभाविक है।

इस प्रकार माधवी नाटक के तीसरे अंक के तीसरे दृश्य में विश्वामित्र गालव की प्रतिज्ञा को पूर्ण घोषित करते हैं। तत्पश्चात महाराज ययाति के आश्रम में एक साथ दो कार्यक्रमों का आयोजन होता है। गालव का दीक्षांत-समारोह और राजकन्या माधवी का स्वयंवर। जंगल में बसा राजा ययाति का आश्रम बड़े-बड़े राजाओं की ईर्ष्या का केंद्र बनता है। स्वयं विश्वामित्र वहाँ पधारकर अपने शिष्य मुनिकुमार गालव को दीक्षा देते हैं। ऋषि विश्वामित्र और महाराज ययाति साधक गालव की वचनबद्धता की प्रशंसा करते हैं। ययाति के यह पूछने पर कि आपको कुछ कष्ट तो नहीं हुआ? विश्वामित्र कहते हैं आश्रमवासियों को वन में नहीं नगरों में कष्ट होता है। विश्वामित्र गालव की महानता की प्रशंसा करते हैं। धुन के पक्के और गहरी निष्ठावाले व्यक्तियों के बिना आर्यावर्त का कल्याण नहीं। **"महाराज, कंचन आग में तपकर ही सोना बनता है। देश के कोने-कोने में भटकने पर भी गालव की एकाग्रता में कोई अंतर नहीं आया। किसी प्रलोभन के मोहपाश में वह नहीं फँसा।"** ययाति मानते हैं कि ययाति यदि दानी नहीं है, तो कुछ भी नहीं है। और वे इस सनातन सत्य को स्वीकार करते हैं कि किसी भी काल में किसी भी व्यक्ति के जीवन में जो कुछ भी घटता है, वह गुरुजनों की कृपा और परिस्थितियों का खेल है। स्वयं मनुष्य केवल निमित्त मात्र है। मनुष्य की ज्जनता की सुरभि व दुष्टता का दुर्गंध देश-देशांतर में सदा-सर्वदा फैलता रहता है। अपने गुरुजनों से प्रशंसा पाकर प्रत्येक शिष्य धन्य होता है।

सौंदर्य व कर्तव्य:

गालव सौंदर्य का नहीं, कर्तव्य का उपासक है। राजकन्या **माधवी** चिरकौमार्य का वरदान प्राप्त होने के कारण प्रसव के बाद अनुष्ठान करके फिर से नवयौव्वना युवती बनती है। गालव की प्रतिज्ञापूर्ति में माधवी का योगदान प्रशंसनीय है। आश्रमवासियों द्वारा गालव पर पुष्पवर्षा होते देखकर माधवी रोम-रोम पुलकित हो उठती है। गालव अनुभव करता है कि वह इस जन्म में तो माधवी का ऋण नहीं चुका पाता। पर माधवी सोचती है कि गालव की प्रतिज्ञा पूर्ण करके वे दोनों स्वतंत्र हुए। गुरु-भार से मुक्त मुनिकुमार गालव अपने आपको अंकिचन मानकर और माधवी का वरण किसी प्रसिद्ध राजा करेगा, इसकी कल्पना करके माधवी से कहता है। **"तुमने मेरा उद्धार किया है। मेरा रोम-रोम तुम्हारे प्रति कृतज्ञ है। मैं धर्म और नैतिक मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं कर सकता। मैं विवश हूँ। जो स्त्री मेरे गुरु के आश्रम में रह चुकी हो, उसे मैं अपनी पत्नी कैसे मान सकता हूँ?"** गालव के माध्यम से लेखक ने यह सिद्ध किया है कि पुरुष के दिल में वासनाएँ कुलबुलाती रहती हैं पर वह ऊपर से आदर्शों और मर्यादाओं की बातें करता रहता है। वह कर्तव्य व स्वार्थ के मँझर में फँसकर भी कहता है कि मेरे जीवन में द्विधा के लिए कोई स्थान नहीं है। मैं कर्तव्य से विमुख नहीं हो सकता।

कर्तव्यपरायण महामानव:

महामानव बनने निकला हुआ गालव अपनी छिछली भावुकता के कारण कर्तव्यपरायण दानव बनता जाता है। वह कहता है कि हम सारा वक्त कर्तव्य की तीखी धार पर चलते हैं। गालव की इस सोच पर माधवी प्रहार करती है- **"चलते नहीं, दूसरों को चलाते हैं। गालव, तुमने मेरे यौवन की आहुति देकर अपनी गुरु-दक्षिणा जुटाई है। संसार तुम्हें ही तपस्वी और साधक कहेगा, मेरे पिता को दानवीर कहेगा। और मुझे? चंचल वृत्ति की नारी, जिसका विश्वास नहीं किया जा सकता।"** नाटककार भीष्म साहनी माधवी के उक्त आरोपों के माध्यम से इस विचित्र विडंबना को स्पष्ट करने का प्रयास

किया है कि पुरुष ने कभी स्त्री को महान मानने की मानसिकता नहीं बनाई। वह केवल एक ही व्यक्ति से प्रेम करता है और वह व्यक्ति है वह स्वयं। गालव जब माधवी से कहता है कि तुम फिर से अनुष्ठान कर अपना पहला रूप धारण कर सकती हो। माधवी, मैं तुम्हें पाकर अपने को धन्य मानूँगा, तो वह गालव से कहती है- "**मैं तुम्हारी पत्नी नहीं बन सकती। केवल शरीर की शिथिलता दूर हो सकती है। गालव, मैं अनुष्ठान करके फिर से युवती बन सकती हूँ, पर अब मैं दिल से तो युवती नहीं बन सकती हूँ ना। मैं तो वह माँ हूँ, जिसकी गोद भरती गई और खाली होती गई। संसार बड़ा विशाल है, गालव, उसमें निश्चय ही मेरे लिए कोई स्थान होगा। युगों-युगों तक तुम्हें मेरा आशीर्वाद मिलता रहे।**" इतना कहकर माधवी धीरे-धीरे नजरों से ओझल हो जाती है और नाटक की कथावस्तु को यहीं पर विराम चिन्ह लगता है।

अनुसंधानित अंश

1.लेखक भीष्म साहनी ने अपनी माधवी नाटक में यह सनातन सत्य सिद्ध किया है कि श्रेष्ठता की प्रशंसा करना, दूसरों की इज्जत करना मनुष्य का सरलतम गुण है।

2. मुनिकुमार गालव के पात्र के माध्यम से लेखक ने यह सिद्ध किया है कि स्वाभिमान एवं अहंकार में बहुत पतला परदा रहता है।

3. इस शाश्वत सत्य को साबित किया गया है कि वचनबद्धता मनुष्य का सुंदरतम गुण है।

4. यह सिद्ध किया गया है कि अपनों की मर्यादा का पालन करने से मनुष्य की शोभा बढती है।

5. इस शाश्वत सत्य को साबित किया गया है कि मनुष्य के दिल में वासनाएँ कुलबुलाती रहती हैं, पर वह ऊपर से आदर्शों और मर्यादाओं की बातें करते रहता है। **6.** इस सुंदर सत्य को साबित किया गया है कि अपनों की प्रतिज्ञा को पूरा कराना मनुष्य को खुशियाँ दिलाता है।

7. इस कठोर सत्य को साबित किया गया है कि स्त्री सेवा की प्रतिमूर्ति है।

8. इस सनातन सत्य को भी साबित किया गया है कि पुरुष चाहे किसी भी औतार में हो, पापी विचारों एवं कामवासनाओं से मुक्त नहीं हो सकता।

सहायक ग्रंथसूचि

1. हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली- डॉ अमरनाथ-राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.

2. मूल नाटक: माधवी- भीष्म साहनी